१.१.१ निर्धारित विकसित पाठ्यक्रम दुर्लभ ग्रंथ कार्यक्रम के परिणामों, निर्दिष्ट कार्यक्रम के परिणामों, पाठ्यक्रम के परिणामों और स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक विकास के लिए आवश्यक सीखने के उद्देश्यों के साथ संस्थान द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी कार्यक्रमों के अनुरूप समाहित हैं।

उत्तर प्रदेश शासनाधिनियम द्वारा स्थापित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास करना और शास्त्रों का संरक्षण करना है। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, और वैश्विक विकास के उद्देश्य के अनुरूप समयबद्ध विकास, परिवर्तन और संवर्द्धन के अंशों को समाहित किया गया है। विश्वविद्यालय सभी की बोधगम्यता के लिए सरल मानक संस्कृत में शास्त्रीय विषय और आधुनिक ज्ञानविज्ञान का संवाहक है। वर्तमान में ०५ संकायों के अन्तर्गत २२ विभागों में १३०५ पाठ्यक्रम और १७७ कार्यक्रम संचालित हैं। पाठ्यक्रम में बहु-विषयक और अंतःविषयक पाठ्यक्रम के साथ शास्त्री, आचार्य, विद्यावारिधि, विद्यावाचस्पति, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र और सेतु कार्यक्रम निर्धारित हैं। वेद, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, भाषाविज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और दर्शन विषयों में स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक विकास के आयामों को विभिन्न रीतियों से पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

- पाठ्यक्रम में स्थानीय विकास से संबंधित विषय समाहित हैं यथा पुराण विभाग के शास्त्री स्तरीय पाठ्यक्रम में स्कन्दपुराणान्तर्गत काशीखंड नामकग्रन्थ निर्धारित है, और यह ग्रन्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भी किया गया है। पाठ्यक्रम में स्थानीय प्रतीकों यथा गंगा के अवतरण, मणिकर्णिका का वर्णन तथा अन्य स्थानीय तीर्थों की महिमा का परिचय पुराणेतिहास पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के पांचवें प्रश्न पत्र में ब्रह्म-वैवर्त पुराण के अंतर्गत काशीरहस्य नामक ग्रन्थ में निहित है । संस्कृतविद्या शास्त्री द्वितीय वर्ष के षष्ठ पत्र में निर्धारित भगवद्गीता में काशीराज का वर्णन ,शास्त्री तृतीय वर्ष ज्योतिष विषयक ग्रन्थ सिद्धान्तशिरोमणि में गंगा का महत्वस्थानीय अवबोधन को दृढ करता है।
- सम्बद्ध स्थानीय सुप्रतिष्ठित ऋषि-महर्षि महात्माओं एवं सन्तों द्वारा प्रणीत यथा शंकराचार्य के शांकरभाष्य का वेदान्त के पाठ्यक्रम में, सौन्दर्यलहरी का योगतन्त्र आचार्यद्वितीय खण्ड के प्रथम पत्र में तथा महात्माबुद्ध द्वारा प्रदत्त उपदेशों का बौद्धदर्शन के शास्त्री स्तरीयपाठ्यक्रममें धम्मपद व बोधिचर्यावतार निवेश किया गया है । पाठ्यक्रम में निर्धारित यंत्रों के अध्ययन के लिए काशी में मानमंदिर स्थित वेधशाला के अनुसार परिसर में निर्मित सुधाकरद्विवेदी वेधशाला छात्रों के ज्योतिष विषयक खगोलीय विषयावबोध के साथ साथ स्थानीय प्रबोधन को प्रोन्नत करती है। आचार्य द्वितीय वर्ष में पौरोहित्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम प्रश्नपत्र में निर्धारित देवालयवास्तुविमर्शः स्थानीय मंदिरों के साथ साथ भारतीय वास्तु एवं स्थापत्यकला का बोध कराता है । पाठ्यक्रम में प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास शामिल है जो राष्ट्रीय महत्व का है।

- प्रादेशिक विषयों के क्रम में उत्तर प्रदेश राज्य के प्रति भी अवबोधन का दायित्व पाठ्यक्रम निर्वहण करता है। इतिहास पाठ्यक्रम में रानी लक्ष्मीबाई और लाल बहादुर शास्त्री की चर्चा है वहीं साहित्य एवं पुराण विषय के शास्त्री एवं आचार्य द्वितीय वर्ष में क्रमशः नैषधीयचरित तथा महाभारत व रामायण ,पुराणादि ग्रन्थ में छात्रों को

राज्य संस्कृति की विशेषताओं अयोध्या, मथुरा, प्रयाग नेमिषारण्य तथा अन्य पवित्र स्थानों के वैशिष्ट्य का बोध कराया जाता है । राष्ट्रीय भावना को दृढ करने के उद्देश्य से वेदविषयक पाठ्यक्रम में आचार्य द्वितीय वर्ष में विविध सूक्तों के माध्यम से एक पाठ्यक्रम निर्धारित है। पौरोहित्य पाठ्यक्रम और फलित ज्योतिष में मंदिर वास्तुकला से समबन्धित ग्रंथ बृहत्संहिता आचार्यस्तर में समाहित है। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों के अनुसार ग्रहगणित के आधार पर विश्वस्तरीय दृक्सिद्धपंचाग का प्रकाशन भी करता है।

• राजशास्त्रविषय के शास्त्री स्तरीय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थ कौटिलीय अर्थशास्त्र भारत की सामाजिक स्थिति एवं आर्थिक स्थिति के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है । मुण्डकोपनिषत् में समागत भारत का प्रतीक ध्येय वाक्य "सत्यमेव जयते वेदान्त" विषयक पाठ्यक्रम में शास्त्री स्तर में निहित है । सिद्धान्त ज्योतिष के आचार्यस्तरीय पाठयांश में केतकीग्रहगणित तथा शास्त्रीस्तरीय सिद्धान्तशिरोमणि में भारत के नगरों का एवं सम्पूर्णविश्व भौगोलिक वर्णन एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन के विभागीय स्नातकस्तरीय पाठ्यक्रम में विविध धर्मों एवं मतानुयायियों यथा सिक्ख धर्म, कबीर, आर्यसमाज के एवं कन्फ्यूशीवाद, ताओवाद फारसीवाद जैसे पश्चिमी सिद्धांतों के निवेश वैश्विक एकता की भावना के अवबोधन को दृढ करता है। तुलनात्मकधर्मदर्शन के शास्त्रीस्तरीय तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम में सभी धर्मों की समानता के दृष्टिकोण से तुलनात्मक सामाजिक दर्शन और अनुष्ठानों में सनातन, इस्लाम, बौद्ध, जैन, फारसी और ईसाई धर्मों के त्यौहारों का समन्वित अध्ययन निर्धारित किया गया है। धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में मनुस्मृति,याज्ञवल्क्य स्मृति,व्यवहारमयूख आदि पाठ्यग्रंथों में षोडश संस्कारों के विधान भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिकता एवं आध्यात्मिकता को विश्व पटल पर स्थापित करता है ।

• पाठ्यक्रम में विविध स्थलों में निर्धारित श्रीमद्भगवदगीता तथा वैदिक और दार्शनिक पाठ्यक्रमों में आचार्य के द्वितीय वर्ष के प्रथमपत्र में निर्धारित संहिता, आरण्यक, ब्राह्मण और उपनिषद् यथा अथर्ववेद के शास्त्री विषयक पाठ्यक्रम मे पृथ्वीसूक्त , कठोपनिषद् में वर्णित सहनाववतु सह नौ भुनक्तु ....मा विद्विषावहै , प्रश्नोपनिषत् में स एव वैश्वानरो विश्वरूपः इशावास्योपनिषत् में इशावास्यमिदं सर्वम् मुण्डकोपनिषत् में भद्रकर्णेभिः , वसुधैव कुटुम्बकम् , यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्, आ नो भद्राः, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् इत्यादि सूक्तांश सर्वे भवन्तु सुखिनःकी वैश्विक एकता की अवधारणाओं को सम्पुष्ट करते हैं।

• भारतीय ज्ञानपरम्परा के संरक्षण हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों में दुर्लभ ग्रन्थों का संयोजन किया गया है। विशेष रूप से वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, दर्शन, पालि, बौद्ध संस्कृतविद्या और राजशास्त्र में शिक्षण और अनुसंधान में पाठ्यपुस्तकों के अंश के रूप में मानवीय मूल्यों का स्फुरण करने वाले दुर्लभ ग्रंथों का एक अनूठा संयोजन है। उदाहरणार्थ संस्कृत विद्या पाठ्यक्रम में शास्त्री कक्षा में विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि, राजशास्त्र पाठ्यक्रम में कौटिलीयअर्थशास्त्र, कामन्दक नीति, बौद्ध दर्शन पालि पाठ्यक्रम मेंमिलिन्दपंहपालि न्यायवैशेषिक विषय में न्यायसिद्धान्तमंजरी ज्योतिष में सिद्धान्ततत्वविवेक, सूर्यसिद्धान्त, प्रतिभाबोधकम्,सिद्धान्तसुन्दरम् इत्यादि प्रमुख हैं ।

इस प्रकार मानवीय मूल्यों का ज्ञान एवं अवबोधन कराने वाले वाले ऋषिप्रणीत दुर्लभ ग्रंथों को पाठ्यक्रम में समाहित कर संरक्षित एवं सवंर्द्धित करना संस्था का विशिष्ट उद्देश्य है। विद्यार्थी ज्ञान अर्जित कर अपने ज्ञान के वैभव से समाज को आलोकित करते हैं। स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक प्रकल्पों यथा श्रावणी उपाकर्म, गंगा आरती, कर्मकांड, सामाजिक प्रबोधन एवं अन्य प्रकल्पों से समाज को उन्नत कर रहे हैं । पाठ्यक्रम द्वारा राष्ट्रियस्तर में अध्यापन, प्रशासन, प्रौद्योगिकी , सैन्य,अनुष्ठान , संचार आदि क्षेत्रों में कुशलता निष्पादित की जाती है । विभिन्न स्तरों पर शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर छात्र प्राचीन ज्ञान की परंपरा को संरक्षित एवं सवंर्द्धित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के सहस्राधिक छात्र अपनी कार्यदक्षता से विभिन्न शासकीय एवं स्वपोषित निकायों में अध्यापक,प्रशासक,कलाकार,धर्मगुरू,कुलपति,धर्मोपदेशक आदि के रूप में समाज को अपनी सेवा से लाभान्वित कर रहे हैं। विश्वविद्यालयीय छात्र राष्ट्रपति पुरस्कार और पद्म पुरस्कार सहित क्षेत्रीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पुरस्कारों से अलंकृत हैं।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में अध्ययन परिषद द्वारा समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार और परिष्कृत किया जाता है। विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम को प्राथमिकता के तौर पर बदलने और परिष्कृत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। विश्वविद्यालय दिशा, देश और काल के अनुरूप पाठ्यक्रम को निर्बाध रूप से संशोधित, संवर्धित और प्रसारित करता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, विश्वविद्यालय विनियमों के अनुसार समस्त पाठ्यक्रमों में एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम आधारित दृष्टिकोण लागू है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम को संशोधित और सम्वर्द्धित किया गया है।

1.1.1 QlM

विकसितापाठ्यचर्या/ स्वीकृताःदुर्लभाःशास्त्रग्रन्थाः, स्थानीय-राष्ट्रिय-प्रादेशिक-वैश्विकविकासस्यआवश्यकतयाअधिगमोद्देश्यैः कार्यक्रमस्यपरिणामैः, निर्दिष्टकार्यक्रमस्य परिणामैः, पाठ्यक्रमस्यपरिणामैः, संस्थया प्रस्तुतानां सर्वेषां कार्यक्रमाणां च परिणामैः सहसङ्गतिं भजन्ते।

उत्तरप्रदेशशासनाधिनियमेन स्थापितस्य सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य मुख्यं लक्ष्यं वर्तते भारतीयज्ञानपरम्परायाः विकासः, शास्त्रसंरक्षणाय च प्रयासाः। विश्वविद्यालस्य पाठ्यक्रमे स्थानीयराष्ट्रीय-प्रादेशिक-वैश्विक-विकासस्य प्रयोजनानुगुणं यथासमयं विकासो विहितः, परिवर्तनं परिवर्धनं च विधीयते।

- विश्वविद्यालयः सर्वेषांकृते सौकर्येण सरलमानकसंस्कृतेन शास्त्रीयविषयान् आधुनिकज्ञानविज्ञानविषयान् च प्रसारयति। विश्वविद्यालये २२ विभागेषु ०५ संकायेषु १३०५ पाठ्यक्रमाः १७७ कार्यक्रमाःसम्प्रति संचालिताः सन्ति।

- पाठ्यक्रमेषु च बहुविषयकाः अन्तर्विषयकाश्च पाठ्यक्रमाः कार्यक्रमाश्च सन्ति शास्त्रि-आचार्य-विद्यावारिधि-विद्यावाचस्पति-डिप्लोमा-प्रमाणपत्र-सेतुकार्यक्रमाः प्रचलिताः सन्ति।
- वेद-व्याकरण-ज्योतिष-साहित्य-भाषाविज्ञान-राजशास्त्र-अर्थशास्त्र-शिक्षाशास्त्र-दर्शनादिविषयेषु च विविधरीत्या पाठ्यचर्यायाः स्थानीयराष्ट्रीयप्रादेशिकवैश्विकविकासस्य पक्षाःसमाविष्टाः सन्ति।
- पाठ्यचर्यायां छात्राध्यापकविचारविमर्शजनितपरिणमैः विभागीय-संकायीय-विश्वविद्यालयीयसमित्या स्तरानुगुणं वृद्धिः प्रतिवर्षं कल्प्यते।
- पाठ्यचर्यायां स्थानीयविकासम्बन्धिनो विषयाः बहुशः समाविष्टाः यथा पुराणविषयकपाठ्यक्रमे पुराणान्तर्गतस्य काशीखण्डस्य अध्ययनमध्यापनं च विधीयते, विश्वविद्यालयद्वारासच ग्रन्थो प्रकाशितश्च विद्यते। काशीप्रतीकानां सांस्कृतिकमूल्यानां गंगावतरणादीनां विवरणं विशिष्टानां महापुरूषाणां महात्माबुद्ध-स्वामीविवेकानन्द-पण्डितराज-जगन्नाथ-रघुनाथशमप्रणीतानां कृतीनां उपदेशानां च निवेशः पाठ्यक्रमे वर्तते। काशीस्थमानमन्दिरवेधशालामनुसृत्यैव परिसरे वेधशाला छात्राणां कृते स्थानीयभावनया सह वैश्विकीं भावनां च परिपोषयति। आचार्य द्वितीयवर्ष पौरोहित्य पाठ्यक्रमे देवालयवास्तुविमर्शः निर्धारितः वर्तते तस्य च विविधस्तरेषुविनियोगः वर्तते।
- काशीसांस्कृतिकप्रतीकानां परिचयः गंगातीर्थादिमाहात्म्यं च पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे शास्त्रिप्रथमवर्षे पंचमप्रश्नपत्रे ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गतं काशीरहस्यमिति नाम्ना संयोजितं विद्यते । तत्रैव च पष्ठपत्रे प्राचीनभारतस्य राजनीतिकेतिहासः पाठ्यक्रमे समाविष्टः यस्य राष्ट्रियमहत्वं विद्यते ।
- प्रादेशिकस्तरे उत्तरप्रदेशराज्यमपि संस्थेयं स्वपाठ्यचयर्या सम्पोषयति। भाषापाठ्यक्रमेषु रानीलक्ष्मीबाई-लालबहादुरशास्त्रिप्रभृतीनां अभिनिवेशो विद्यते। राज्यसांस्कृतिप्रतीकानां अयोध्यामथुरा प्रयागादितीर्थस्थलानां शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे नैषिधीयचरितेवाराणस्याः वैशिष्ट्यं छात्रेषु प्रतिबोध्यते तथैव शास्त्रिद्वितीयवर्षे पंचमपत्रे पुराणेतिहासपाठ्यक्रमे वाल्मीकिरामायणे अयोध्यायाः महाभारते च मथुरायाः तीर्थराजप्रयागस्य च वर्णनं समायाति। राष्ट्रीयसर्वधर्मभावविकासाय तुलनात्मकधर्मदर्शनविभागे विभिन्नधर्मावलम्बिनां सिद्धान्ताना सिक्ख-कबीर-आर्यसमाजसहितं पाश्चात्यदेशीयसिद्धान्तानांकन्फ्यूशियस-ताओ-फारसीधर्मादीनां सहैवाध्यायनं विधीयते।
- शास्त्रितृतीयवर्षे सूक्तरत्नसंग्रहःइति ग्रन्थःकाशीविदुषा श्रीगोपालचन्द्रमिश्रेण एव प्रकाशितः पाठ्यक्रमे निर्धारितः विद्यते।

- राष्ट्रियावश्यकतानां विषये वेदपाठ्यक्रमे आचार्यद्वितीयवर्षे वैदिकभारतविषये पाठ्यक्रमः निर्धारितः वर्तते। पौरोहित्यपाठ्यक्रमे फलितज्योतिषे च देवालयवास्तुविमर्शः इति पाठ्यक्रमः निर्धारितः वर्तते।
- कौटिलीयार्थशास्त्रम्-प्राचीनराजशास्त्रपाठ्यक्रमेवैश्विकावश्यकतानां संगतिं प्रददाति।
- वैश्विकविकासदृष्ट्या तुलनात्मकधर्मदर्शने शास्त्रितृतीयवर्षे श्रीमदभगवद्गीताविश्वैकतां सम्पोषयति।
- वेदविषयकपाठ्यक्रमे दर्शनविषयकपाठ्यक्रमे च आचार्यद्वितीयवर्षे प्रथमपत्रे निर्धारितेषु संहिता-आरण्यक-ब्राह्मण-उपनिषत्सु वसुधैवकुटुम्बकम् यत्र विश्वंभवत्येकनीडम्, आ नो भद्राः,कृण्वन्तो विश्वमार्यम् प्रभृतयः मन्त्राः वैश्विकविकाशस्य अवधारणाः ज्ञापयन्ति।
- तुलनात्मकधर्मदर्शने शास्त्रितृतीयवर्षस्यपाठ्यक्रमे सर्वधर्मसमभावदृष्ट्या तुलनात्मकं समाजदर्शनम् कर्मकाण्डे च सनातन-इस्लाम-बौद्ध-जैन-फारसी-इसाई-धर्माणां पर्वणामपि समन्वयात्मकं अध्ययनं विधीयते । षोड़शसंस्काराणां विषये धर्मशास्त्रस्य सम्पूर्णे पाठ्यक्रमे चर्चा विद्यते ।

- विविधेषुविभागेषुदुर्लभशास्त्रग्रन्थानां भारतीयविद्यासंरक्षणायसंयोजनं कृतंविद्यते। विशेषतः वेदज्योतिषधर्मशास्त्र-दर्शन-पालि-बौद्ध-राजशास्त्रप्रभृतिषुविभागेषुआचारविचारनीति-मानवमूल्यसंवर्द्धकानांदुर्लभग्रन्थानांपठनपाठनेशोधकार्येचपाठ्यांशत्वेनभूयस्संयोजनंविद्यते। यथा संस्कृतविद्यापाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः, राजशास्त्रपाठ्यक्रमे शास्त्रिस्तरे कैटिलीयार्थशास्त्रम्, कामन्दकनीतिः, न्यायवैशेषिकविषये शास्त्रिस्तरे न्यायसिद्धान्तमंजरी, बौद्धदर्शनपालिपाठ्यक्रमे मिलिन्दपंहपालि, ज्योतिषे शास्त्रिस्तरे फलिते सिद्धान्ते च सूर्यसद्धिान्तः, सिद्धान्तसुन्दरम्, धर्मशास्त्रे च आचार्यप्रथमवर्षे तृतीयपत्रे श्राद्धप्रकाशः आचारसिद्धिः इति प्रभृतयःदुर्लभग्रन्थाः पाठ्यक्रमे वर्तन्ते।

अनेनदुर्लभग्रन्थानांपाठ्यक्रमे सन्निवेशस्य मौलिकप्रयोजनं संरक्षणं मानवीयमूल्यानां प्रबोधनं च विद्यते ।विश्वविद्यालयस्यायसर्वेषुविभागेषु ऋषिप्रणीतग्रन्थाः विशेषरूपेणपाठ्यक्रमेअङ्गीकृतास्सन्ति।

- विश्वविद्यालयस्यपाठ्यक्रमेणसर्वविधज्ञानं छात्रेषुसंरक्षितंभवति ।
- ज्ञानार्जनेनदक्षाः छात्राः स्वविद्यावैभवेनसमाजंप्रकाशयन्तिशास्त्रानुकूलव्यवहारेण समाजस्तरम्अभिवर्द्धते।
- छात्राः स्थानीयस्तरे सांस्कृतिकोपक्रमेषु यथा श्रावणी उपाकर्म, गंगा-आरती, कर्मकाण्डादिसामाजिक प्रकल्पेषु दक्षाःभवन्ति।
- विविधस्तरेषुशैक्षणिकप्रतियोगितासु भागं गृहीत्वा प्राचीनज्ञानपराम्परायाः सम्वर्धनं कुर्वन्ति।

- राष्ट्रियस्तरे अध्यापनक्षेत्रे, प्रशासनक्षेत्रे प्रौद्योगिकीयकीयक्षेत्रे सैन्यक्षेत्रेधर्मगुरुरूपेण कर्मकाण्डक्षेत्रे, कथाप्रवचनोद्बोधनक्षेत्रेषु प्रवाचकरूपेणसहैवआरक्षक्षेत्रे आरक्षकरूपेणसंचारक्षेत्रेपत्रकाररूपेणराजनीतिकक्षेत्रे जनप्रतिनिधिरूपेणदेशंसेवन्ते।
- क्षेत्रीयप्रादेशिकराष्ट्रीयस्तरेषु विशिष्टपुरस्कारैः राष्ट्रपतिपुरस्कारैश्चपद्मपुरस्कारैश्चविश्वविद्यालयी याःछात्राः विभूषिताः भवन्ति।

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये समाजापेक्षानुरूपम् पाठ्यक्रमस्य निर्माणं परिष्करणञ्च अध्ययनपरिषदा क्रियते। पाठ्यक्रमपरिवर्तनाय परिष्करणाय च विश्वविद्यालयोयं प्राथम्येन सततं यतते। दिग्देशकालानुरूपं पाठ्यचर्याणां संशोधनं परिवर्द्धनं प्रसारणञ्च विश्वविद्यालयोयं निर्बाधतया कुरुते। विश्वविद्यालयानुदानायोगपक्षतः प्राप्तनिर्देशानुसारं विश्वविद्यालयीयपरिनियमानुसारेण सर्वेषु स्नातकस्तरीयपाठ्यक्रमेषु ऐच्छिकपाठ्यक्रमाश्रितपद्धतिः प्रचलितास्ति। रष्ट्रियशिक्षानीति 2020 द्वारा प्रदत्तनिर्देशानुसारेण पाठ्यक्रमस्य संशोधनं परिवर्धनं च कृतमस्ति।

प्रकाशित पाठ्यक्रम निदर्शिका

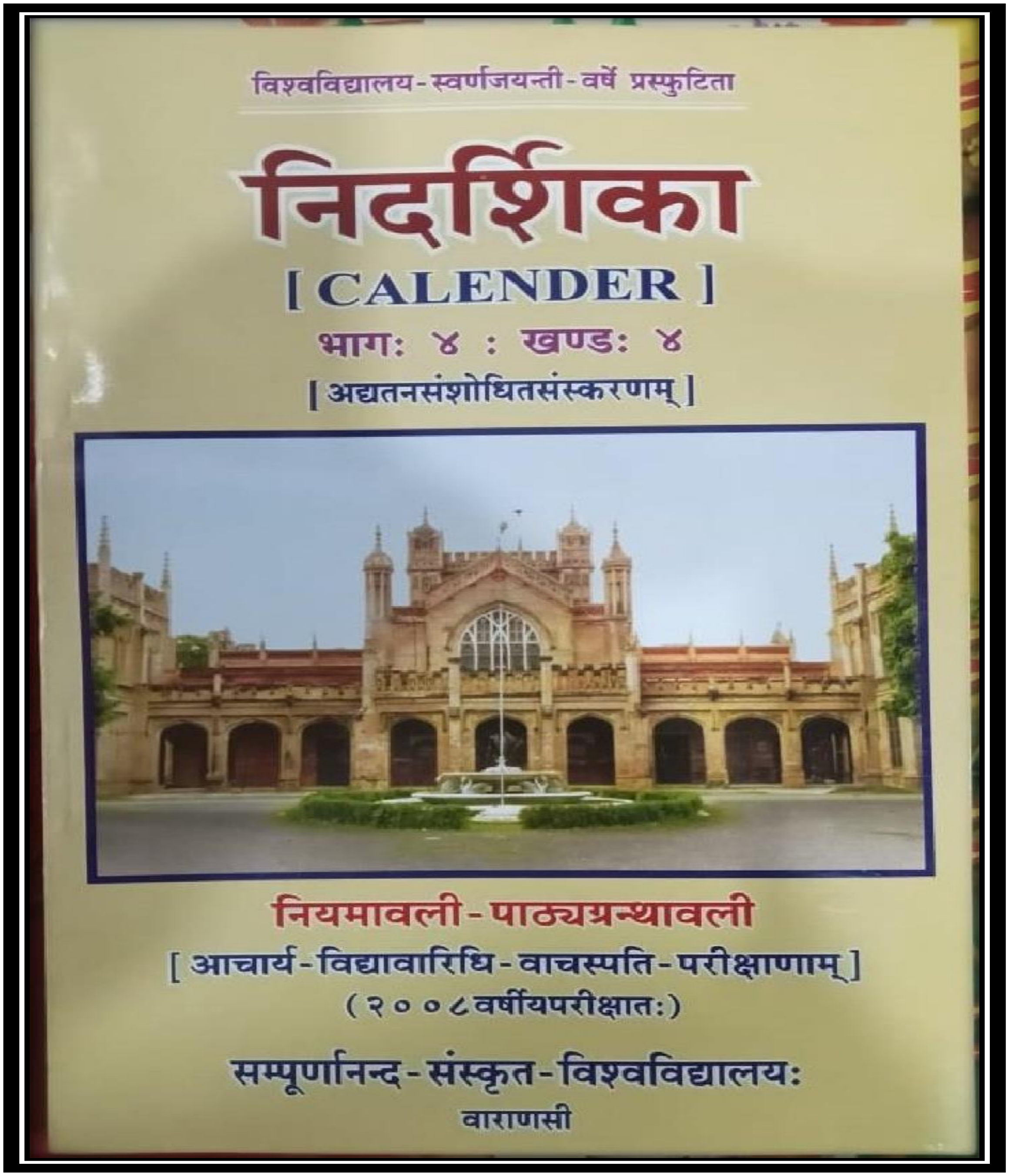

https://ssvv.ac.in/syllabus

आचार्य पाठ्यक्रम

प्रकाशित पाठ्यक्रम निर्दशिका

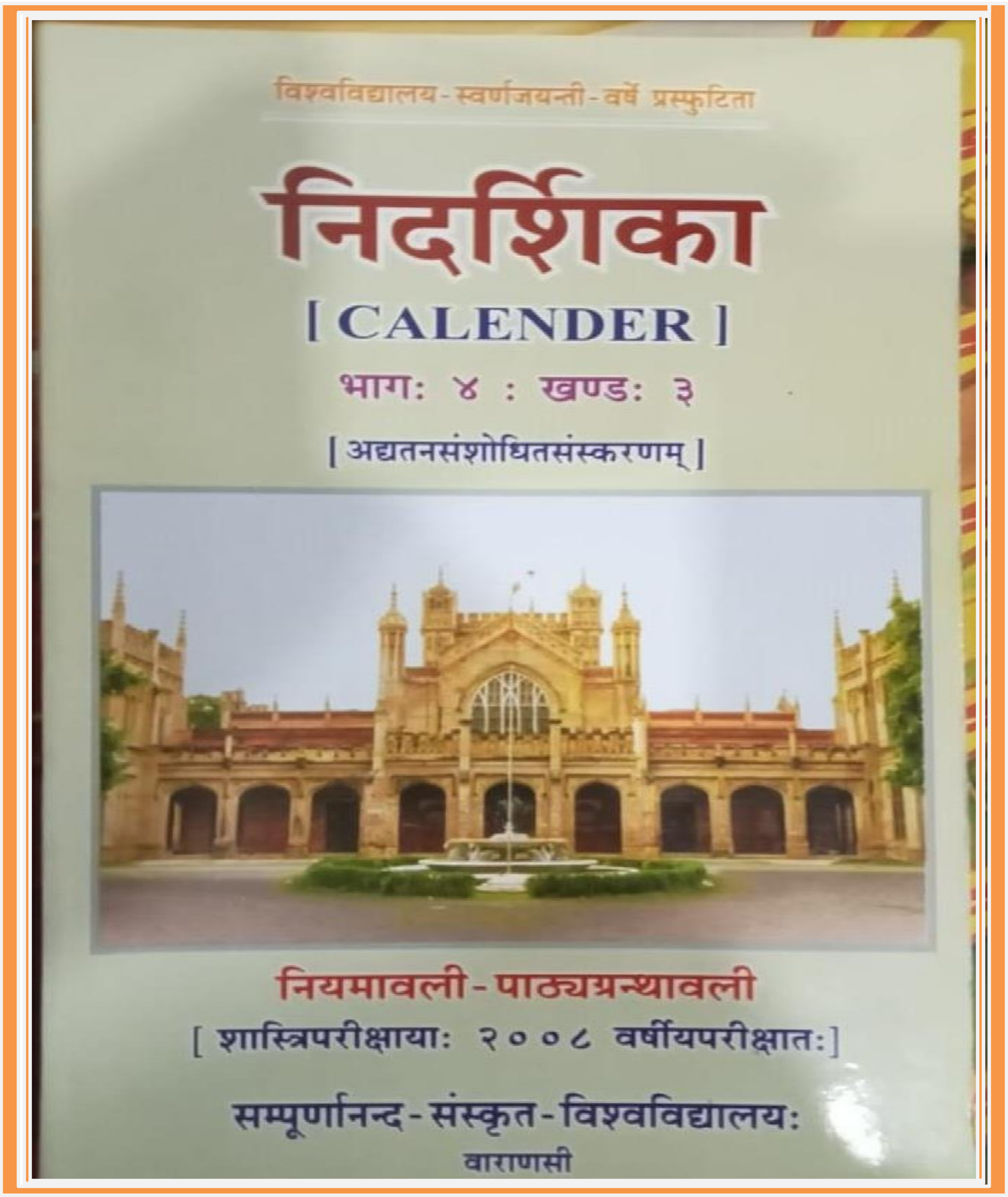

स्थानीय

प्रादेशिक

राष्ट्रिय

वैश्विक

शास्त्री पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम में समाहित विविध पाठ्यांश

सहायकग्रन्थौः

१. मन्त्रार्थदीपिका शत्रुघ्नमिश्रकृता

२. याज्ञिकसुधा १५

(ग) धर्मस्वरूपज्ञानम्

सहायकग्रन्थः

१. धर्म का स्वरूप। प्राप्तिस्थान–श्रीकिशो..विश्वनाथ, नेपालीखपड़ा, वाराणसी।

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) श्रीमद्भागवतस्य प्रथमः स्कन्धः द्वितीयस्कन्धश्च	८०
(ख) पद्मपुराणान्तर्गतं भागवतमाहात्म्यम्	२०
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) दुर्गासप्तशती (शान्तनवीटीका)	४०
(ख) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणान्तर्गतं काशीरहस्यम्	६०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	**१००**

प्राचीनभारतस्य राजनीतिकेतिहासः

प्रारम्भतः कुषाणकालपर्यन्तम्

अथवा

श्रीमद्भागवतस्य तृतीयस्कन्धः

सहायक-ग्रन्थाः

१. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. एस. एन. दूबे, आगरा

२. प्राचीन भारत का इतिहास–डॉ. विमलचन्द्र पाण्डेय

३. प्राचीन भारत–डॉ. राजबली पाण्डेय

४. प्राचीन भारत–डॉ. राधामुकुन्द मुखर्जी

५. श्रीमद्भागवतम् : श्रीधरी टीका

६. दुर्गासप्तशती : सम्पादकः–प्रो. गिरिजेशकुमारदीक्षितः

षष्ठं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) वाल्मीकिरामायणस्याऽयोध्याकाण्डस्य शततमोऽध्यायः	५०
(ख) दशकुमारचरितस्याऽष्टमोच्छ्वासः	५०

३२. भारतीयविद्यासंस्कृतिः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
व्याकरणं भाषाविज्ञानञ्च–	
(क) वैयाकरणभूषणसारः (धात्वर्थप्रकरणमात्रम्)	४०
(ख) सिद्धान्तकौमुदी पंचसन्धिः फक्किकावर्जितः	३०
(ग) भाषाविज्ञानम्–ऐतिहासिकं भाषाविज्ञानम् अर्थपरिवर्तनम् भारतीय-आर्य-भाषापरिवारस्येतिहासः।	३०
पञ्चमं प्रश्नपत्रम् (साहित्यम्)	१००
(क) कुमारसम्भवम् ४, ५, ७ सर्गाः	४०
(ख) साहित्यदर्पणम् २-३ परिच्छेदौ	४०
(ग) भगवदज्जुकीयम्	२०
अथवा	
(क) प्रत्यभिज्ञाहृदयम्	४०
(ख) श्रीमद्भागवतम्–(प्रथमस्कन्धः)	४०
(ग) मनुस्मृतिः–१-२ अध्यायौ	२०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्–दर्शनम्	१००
(क) श्रीमद्भगवद्गीता एकादशत अष्टादशाध्यायपर्यन्ता	४०
(ख) कठोपनिषद् (नाचिकेतोपाख्यानपर्यन्तम्)	४०
(ग) योगसूत्रम् (प्रथमः पादः)	२०

३३. भाषाविज्ञानम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
संस्कृत भाषा की संरचना: सिद्धान्तकौमुदी का समास, कारण प्रकरण (सम्पूर्ण)।	

गङ्गा विश्वेश्वरः काशी जागर्ति त्रितयं यतः।
तत्र नैःश्रेयसीलक्ष्मीर्लभ्यते चित्रमत्र किम्॥

—(स्कन्द पु० काशीखण्ड ३५ अ० श्लो० १०)

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः॥

स्थानीय विकास के अनुरूप परिणाम

विविध कार्यक्रमों में छात्रों की सहभागिता

सायंकालीन गंगा आरती में विश्वविद्यालय के छात्रों की सहभागिता

दिनांक २६-०२-१६

गंगा दशहरा के अवसर गंगा आरती में विश्वविद्यालय के छात्रों की सहभागिता

दिनांक **12—06—19**

स्थानीय अधिगम के परिणाम

स्थानीय लोगों के साथ स्थानीय महत्व के पर्व श्रावणी उपाकर्म का गंगातट पर आयोजन कराते विश्वविद्यालय के छात्र एवं आचार्य दिनांक १५.१२.२०२२

माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्रप्रधान जी भारत सर्वकार को श्रीकाशीविश्वनाथमन्दिर में स्थानीय उपक्रमों से अवगत कराते विश्वविद्यालय के छात्र

दिनांक-**20.10.2022**

मानननीय प्रधानमंत्री जी का काशी में स्वागत करते
विश्वविद्यालय के छात्र दिनांक दिनांक-**20.10.2022**

माननीया कुलाधिपति महोदया द्वारा पाठ्यक्रम संवर्धन एवं शैक्षिक उन्नयन हेतु
विश्वविद्यालय को निर्देश दि.**06.06.24**

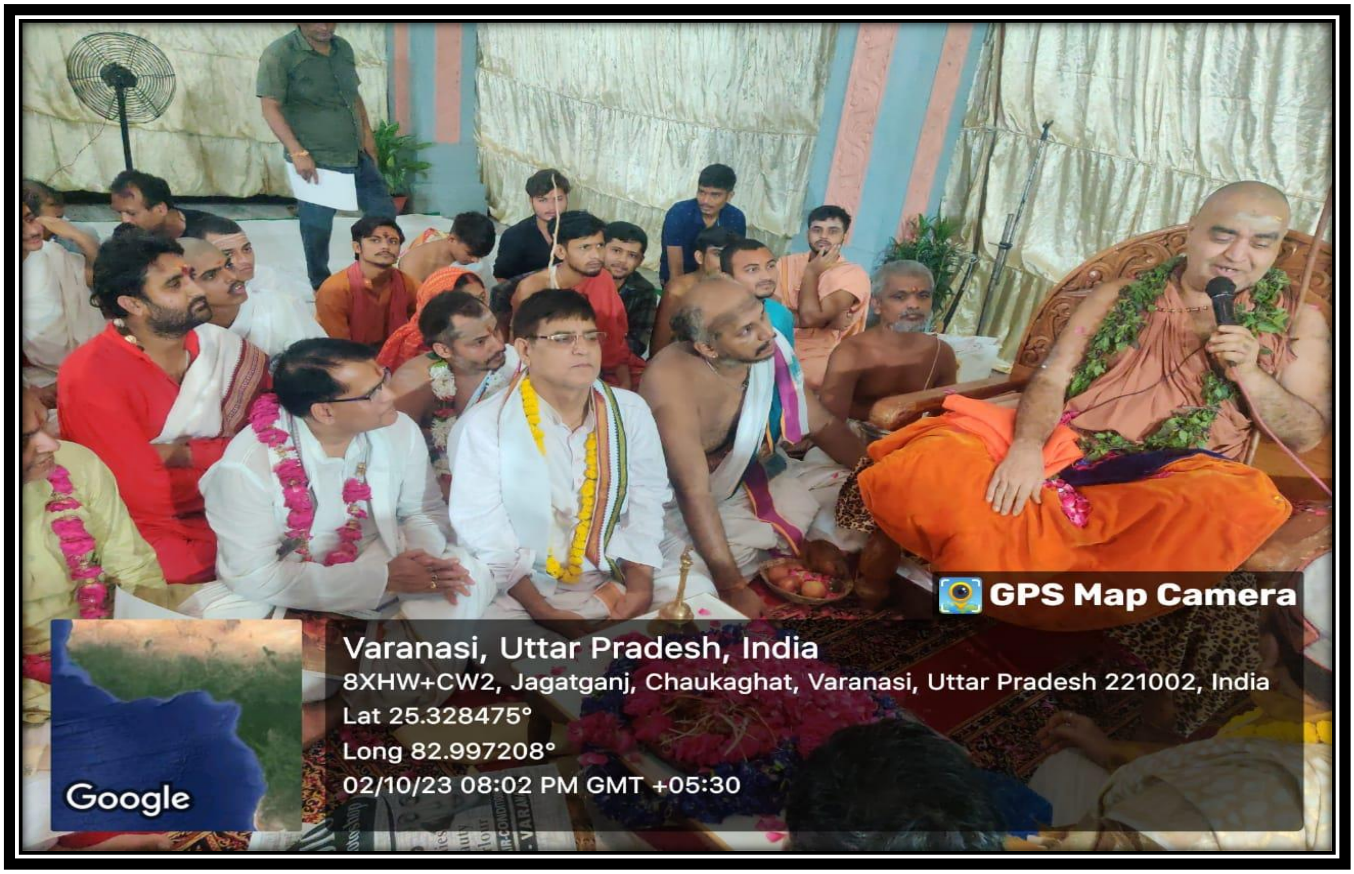

कांचीपीठ शंकराचार्य जी के सानिध्य में विश्वविद्यालय परिसर में शैक्षिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन तथा काशी के माहात्म्य पर परिचर्चा दि.२१.१२.२०२३

महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में पूजनादि अनुष्ठान सम्पादित कराते विश्वविद्यालय के छात्र दि.१५.१२.२२

स्थानीय छात्रों का प्रतिबोधन

स्थानीय विद्यालय के छात्रों को विश्वविद्यालय परिसर स्थित वेधशाला से अवगत कराते विश्वविद्यालय के आचार्य दिनांक २१.१२.२३

स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में संस्कृत की रूचि उत्पन्न करते हुए वार्ता करते विश्वविद्यालय के अध्यापक दि.३०.०१.२०२४

काशी सांसद संस्कृत प्रतियोगिता में पुरस्कृत विश्वविद्यालय के छात्र

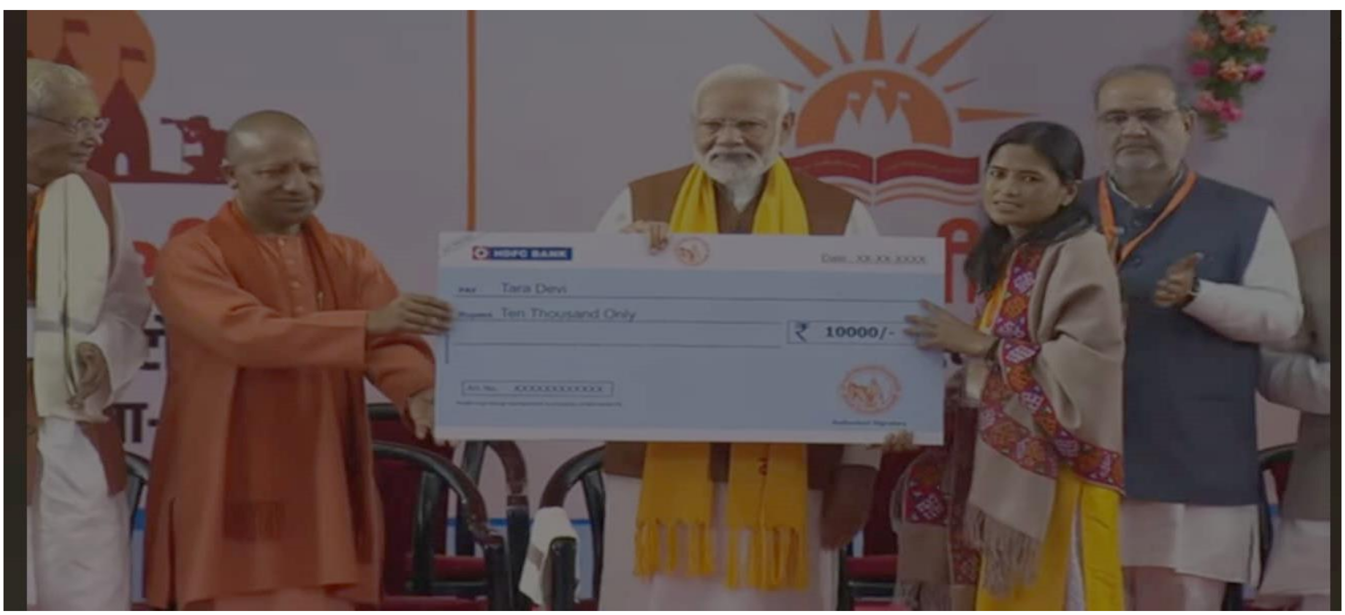

काशी सांसद प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विजेता छात्रों को पुरस्कृत करते
माननीय प्रधानमन्त्री जी एवं उत्तरप्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री जी
दिनांक २३.०२.२०२४

काशी सांसद प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विजेता छात्रों को पुरस्कृत करते श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर न्यास के अध्यक्ष प्रो. नागेन्द्र पाण्डेय जी एवं विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. बिहारीलाल शार्मा जी दि.१५.०२.२०२३

काशी सांसद प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विजेता छात्र- छात्राएँ दि.१५.०२.२०२३

राष्ट्रीय अधिगम के पाठ्यांश

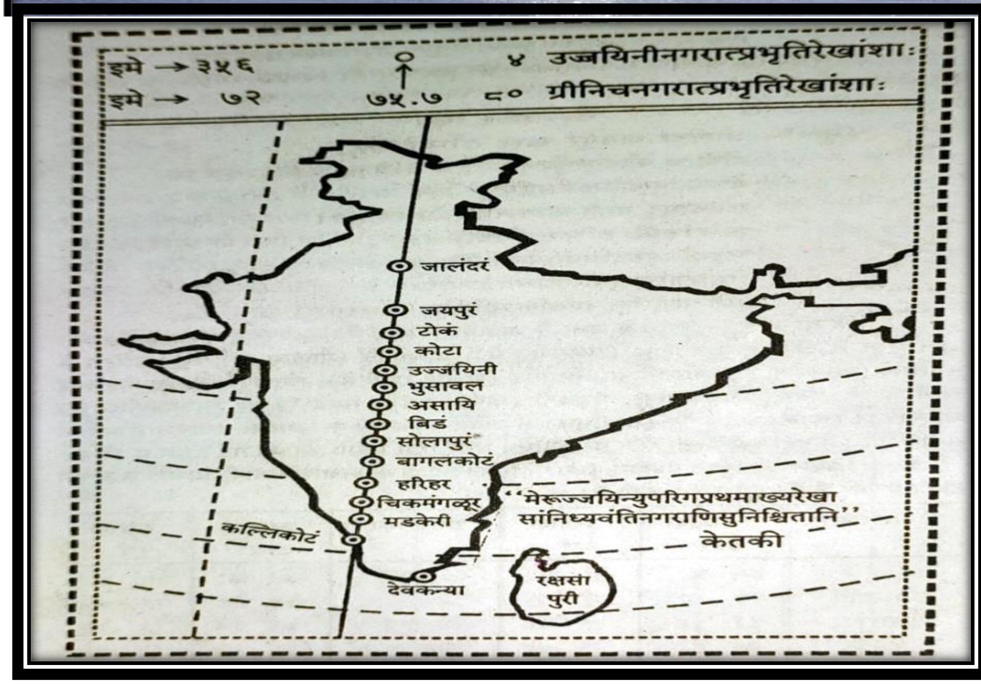

उज्जयनि रेखा

जालंदरं जयपुरं खलु सौम्यदेशे ।
टोंकं च कोटपुरमुज्जयिनी च मध्ये ।
याम्ये भुसावळमसायिपुरं बिडं च ।
सोलापुरं तदनु बागलकोटसंज्ञम् ।।9।
कर्णाटके हरिहरं चिकमंगळूरं,
मड्केरिपूरुदधितीरगकल्लिकोटम् ।
मेरूज्जयिन्युपरिगप्रथमाख्यरेखा- ।
सांनिध्यवन्ति नगराणि सुनिश्चितानि ।।10।।

राष्ट्रीय अधिगम के पाठ्यांश

सहायकग्रन्थौ

१. चरणव्यूहः, समुपलब्धवेदशाखापरिचयसहितः
२. कातीयश्रौतसूत्रस्य भूमिका–म.म. श्रीविद्याधरशर्मकृता

२६. पुराणेतिहासः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
श्रीमद्भागवतस्य चतुर्थस्कन्धः	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) वाल्मीकिरामायणे बालकाण्डे आदितः पञ्चाशत् सर्गाः	६०
(ख) महाभारतम् अनुशासनपर्वणि आदितः पञ्चविंशत्यध्यायाः	४०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) विष्णुपुराणे पञ्चमोंऽशः	३०
(ख) देवीभागवते प्रथमस्कन्धः	३०
(ग) प्राचीनभारतस्येतिहासः गुप्तकालादारभ्य हर्षकालं यावत्	४०

।। श्रीः ।।

श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्

नानादेशीयकोशानुसारेण संशोधितम्।

विपुलेनोरसा बिभ्रत्कौस्तुभस्य सहोदरम्।
आघूर्णिततरङ्गौघः कालिकानिलसङ्कुलः ।। २२ ।।

उसके प्रशस्त वक्षःस्थल पर वह रत्न कौस्तुभमणि के सहोदर भाई की तरह शोभायमान थी। उस समय वह उठती हुई तरंगों, मेघों और तेज हवा से पूर्ण था ।। २२ ।।

गङ्गासिन्धुप्रधानाभिरापगाभिः समावृतः।
सागरः समुपक्रम्य [1]पूर्वमामन्त्र्य वीर्यवान् ।। २३ ।।

गङ्गा सिन्धु आदि मुख्य मुख्य नदियाँ और नद उसके साथ थे। समुद्र ने श्रीरामचन्द्र जी को "हे राम!" कह कर प्रथम सम्बोधन किया ।। २३ ।।

s

राष्ट्रीय अधिगम के पाठ्यांश

भारतस्य वपुर्ह्येतत् सत्यं चामृतमेव च ।
नवनीतं यथा दध्नो द्विपदां ब्राह्मणो यथा ।। २६४ ।।
आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा ।
ह्रदानामुदधिः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् ।। २६५ ।।
यथैतानीतिहासानां तथा भारतमुच्यते ।
यश्चैनं श्रावयेच्छ्राद्धे ब्राह्मणान् पादमन्ततः ।। २६६ ।।
अक्षय्यमन्नपानं वै पितॄंस्तस्योपतिष्ठते ।

प्रथमं प्रश्नपत्रम्	१००
कौटलीयार्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणम् (जयमङ्गलाटीकासहितः)	
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्	१००
कामन्दकीय नीतिसारः (१३-२० सर्गपर्यन्तम्) (जयमङ्गलाटीकासहितः)	
तृतीयं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) याज्ञवल्क्यस्मृतेः राजधर्मप्रकरणम् मिताक्षरासहितम्	५०
(ख) मनुस्मृतेः राजधर्मप्रकरणम्	५०
चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	१००
(क) शुक्रनीतिः (राजशास्त्रार्थशास्त्रविषयाः)	७०
(ख) राजनीति-मयूखः	३०

पाठ्यग्रन्थाः

१. षड्दर्शनसमुच्चयः–हरिभद्रसूरिः
२. पाश्चात्यदर्शनम्–त्र्यम्बक-आत्माराम-भण्डारकरः।

पञ्चम-प्रश्नपत्रम् १००

आधुनिक-भारतीय-धर्माणां परिचयः

सिक्खः–सिक्खधर्मस्य ऐतिहासिकः विकासक्रमः, ईश्वरविचारः, जगज्जीवयोः विचारः, मरणोत्तरं जीवनम्, कर्मकाण्डानि।

कबीरपन्थः–ऐतिहासिकः विकासक्रमः, तत्त्वज्ञानम्, ईश्वरविचारः, जगद्विचारः, कार्यसिद्धान्तः, उपासनापद्धतिः, कर्मकाण्डानि।

आर्यसमाजः–ऐतिहासिकः विकासक्रमः, ब्रह्म-जगद्-जीवविचारः। मरणोत्तरं जीवनम्, यज्ञोपासनापद्धतिः, कर्मकाण्डानि च।

पाठ्यग्रन्थाः

१. जपु जी का जप्रसंहिता (सं.) रामरङ्ग शर्मा, वीजकं–कबीरकृतम्।
२. सहजयोग कबीर–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
३. सत्यार्थप्रकाशः–स्वामी दयानन्द।

सहायकग्रन्थाः

१. सिक्ख धर्म-दर्शन की रूपरेखा–जोध सिंह।
२. तुलनात्मक धर्म–याकूब मसीह।

राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का प्रतिभाग

विश्वविद्यालयीय छात्रों द्वारा अखिल भारतीय संस्कृत शलाका मथुरा में २०२३ में प्रतिभाग

विश्वविद्यालयीय छात्रों द्वारा अखिल भारतीय संस्कृत शलाका मथुरा में २०२३ में प्रतिभाग

प्रादेशिक अधिगम के पाठ्यांश

२. वैदिकवाङ्मय का इतिहास–भगवद्दत्तः
३. वैदिक साहित्य और संस्कृति–बलदेव उपाध्याय

७. पौरोहित्यम्

प्रथम-प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) देवालयवास्तुविमर्शः ४०

अध्येतव्यविषयाः–भूमिचयनम्, शिलान्यासः, इष्टकाल-स्वरूपम्, प्रासाद-भित्ति-शिखर-कलशाद्युच्छ्रायः, गर्भगृह-परिक्रमादिमानम्, ध्वजदण्डपताकादिस्वरूपम्, द्वारदैर्घ्यम्, मूर्तिप्रमाणम्, प्रतिमास्वरूपम्, ध्यानानुसारं देवमूर्तयः, वाहनानि, आयुधानि, वस्त्रालंकरणादिकञ्च।

अभिपर्यालोचनीयग्रन्थाः–१. समरांगणसूत्रधारः, २. मनसोल्लासः, ३. हरिभक्तिविलासः, ४. हिन्दूसर्वस्वम्, ५. शिल्पम्।

(ख) गृहवास्तुविमर्शः ३०

अभिपर्यालोचनीयग्रन्थः–वास्तुराजवल्लभः।

(ग) देवतीर्थधामादिपर्यालोचनम्। ३०

अध्येतव्यविषयाः–तीर्थधामादिलक्षणम्, चतुर्धामपरिचयः, सप्तपुर्यः द्वादशज्योतिर्लिंगानि, अष्टमूर्तिशिवालयाः, एकपञ्चाशत्शक्तिपीठानि, शंकराचार्यपीठानि, रामानुज-मध्व-निम्बार्क-गौडीय-रामानन्द-गोरक्षाचार्यपीठानि च।

अष्टमं प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) निदानकथा (जातकट्ठकथा) दूरे निदानम् ५०

(ख) धम्मपदं ५०

अत्तवग्गो, बुद्धवग्गो, बालवग्गो, पण्डितवग्गो, पुप्फवग्गो, मग्गवग्गो, चित्तवग्गो, नागवग्गो, तण्हावग्गो, भिक्खुवग्गो, ब्राह्मणवग्गो।

१०. प्राकृतम्

सप्तमं प्रश्नपत्रम् **१००**

(क) प्राकृतव्याकरणम्

(मागधी, अर्धमागधी-शौरसेनी-महाराष्ट्रीप्राकृतानां व्याकरणम्) निम्नांकितेषु कमप्येकग्रन्थानुसारम् हेमचन्द्रकृतम् प्राकृतव्याकरणम् (हेमशब्दानुशासनान्तर्गतम्), वररुचिकृतः प्राकृतप्रकाशः, त्रिविक्रमकृतम् प्राकृतव्याकरणम्।

(ख) रचनानुवादः

सहायकग्रन्थ

१. प्राकृत प्रबोध नेमिचन्द्र शास्त्री। प्रकाशक-चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

२. अभिनव प्राकृत व्याकरण–डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री। प्रकाशक-तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी।

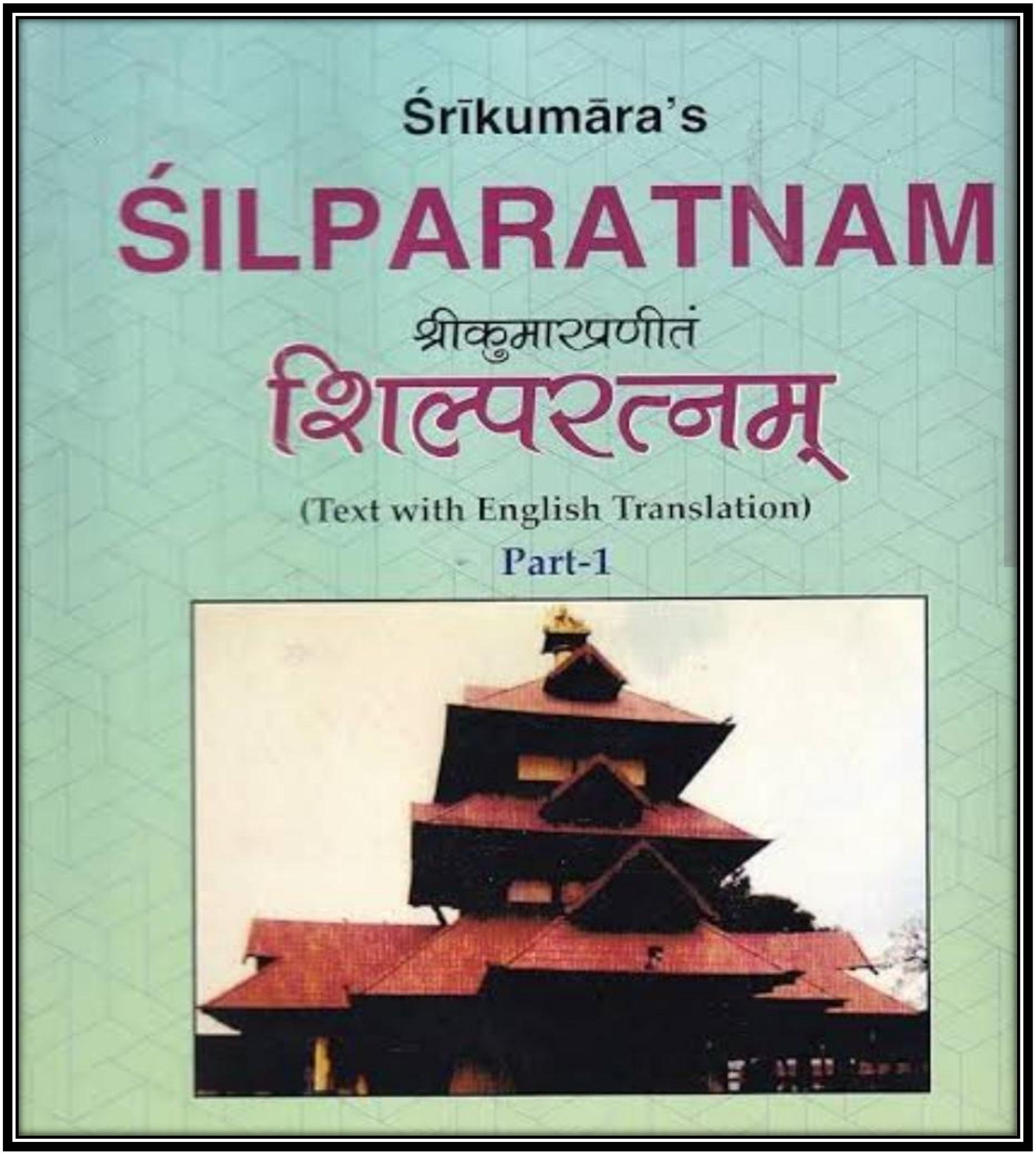

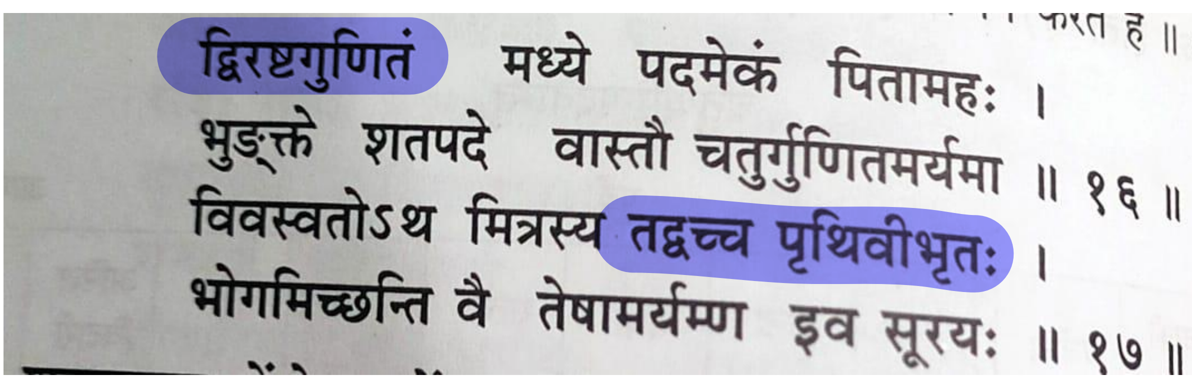

द्विरष्टगुणितं मध्ये पदमेकं पितामहः ।
भुङ्क्ते शतपदे वास्तौ चतुर्गुणितमर्यमा ॥ १६ ॥
विवस्वतोऽथ मित्रस्य तद्वच्च पृथिवीभृतः ।
भोगमिच्छन्ति वै तेषामर्यम्ण इव सूरयः ॥ १७ ॥

वैश्विक अधिगम के पाठ्यांश

मानमेयोदयः नारायणभट्टकृतः

१४. वेदान्तः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१००**
वेदान्तपरिभाषा	
सहायक ग्रन्थ प्रो. पारसनाथ द्विवेदी द्वारा सम्पादित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	**१००**
ईश-केन-कठ-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेयोपनिषदः स्व-स्वसम्प्रदायानुसारिव्याख्यासहिताः (विशेषः–छात्रैः प्रश्नोत्तरकाले स्वस्वसम्प्रदायटीकायाः स्वाभ्यस्तटीकाया वा निर्देशो विधेयः)	
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	**१००**

१२. साङ्ख्ययोगः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) साङ्ख्यसारः (पूर्वभागः) विज्ञानभिक्षुकृतः	५०
(ख) साङ्ख्यतत्त्वप्रदीपः–वैकुण्ठशिष्ययतिकविराजयतिकृतः	५०
अथवा	
(ग) साङ्ख्यपरिभाषा	
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) सांख्यतत्त्वविवेचनम्–षिमानन्ददीक्षितकृतः	२५
(ख) तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः	२५
(ग) षट्चक्रनिरूपणम्	५०
षष्ठं प्रश्नपत्रम्	**१००**
(क) ईश-केन-कठ-तैत्तिरीय-ऐतरेय-श्वेताश्वरतर-उपनिषदः	५०
(ख) उपदेशसाहस्री (गद्यांशमात्रम्)	५०

१३. पूर्वमीमांसा

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्	**१००**
जैमिनीयन्यायमालायाः सविस्तरायाः १-२ अध्यायौ	

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥*
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥†
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ॥ १ ॥

तुलनात्मकसमाजदर्शनम् **षष्ठपत्र -१००**

१. पाश्चात्त्य समाजदर्शन–

(क) समाजदर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र, अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध।

(ख) समाज-व्यवस्था का आधार–मानव-प्रकृति, समुदाय, साहचर्य-प्रणालियाँ।

(ग) राष्ट्र-व्यवस्था का आधार–परिवार, शैक्षिक संस्थाएँ, औद्योगिक संस्थाएँ, राज्य, न्याय, सामाजिक आदर्श।

(घ) विश्व-व्यवस्था–अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध, धर्म, संस्कृति एवं सभ्यता।

(ङ) राजनैतिक विचारधाराएँ–प्रजातन्त्र, समाजवाद, फासिस्टवाद, साम्यवाद, राजतन्त्र।

(च) सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त–संविधानवाद, क्रान्तिवाद, आतंकवाद

सन्दर्भ ग्रन्थ

१ -पञ्चतन्त्र विष्णुशर्मा प्रणीत

२- तुलनात्मक धर्म एवं संस्कृति - इन्दुनाथ ।

'अयं निजः परो वे'ति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्' ॥ ३८ ॥

४. प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति

सप्तम-प्रश्नपत्र १००

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

मानव सभ्यता के उद्भव के विभिन्न सोपानों का सर्वेक्षण, नदियों की घाटियों में सभ्यताओं का उद्भव।

पश्चिम एशिया की सभ्यताएँ—सुमेरिया, बेबीलोनिया, सीरिया, ईराक, मिश्र, यूनान, ईरान एवं चीन की सभ्यता।

दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति, उपनिवेशीकरण के कारण एवं सम्पर्क के माध्यम, कम्बूज, चम्पा, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया के समाज, कला, शिक्षा एवं साहित्य का अध्ययन।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

१. विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ—श्रीराम गोयल।
२. विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ—शिवस्वरूप सहाय।
३. विश्व सभ्यताएँ—राजछत्र मिश्र।
४. विश्व इतिहास—रामप्रसाद त्रिपाठी।
५. सभ्यता की कहानी—डूरेन्ट विल।
६. सुदूरपूर्व में भारतीय संस्कृति एवं उसका इतिहास—बैजनाथ पुरी।
७. सुदूरपूर्व में भारतीय उपनिवेश—आर.सी. मजूमदार।

१००

वैश्विक अधिगम के परिणाम

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्वस्तरीय शास्त्रार्थकार्यक्रम

दि. ६-११ ज़ुलाई २०१६

शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्र दीपक वत्स श्री अर्जुन राम मेघवाल, संस्कृति एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री, भारत सरकार एवं श्रीमती मीनाक्षी लेखी, संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार से मैथिली भाषा में सर्वोत्तम काव्यरचना के निमित्त सम्मान प्राप्त करते हुए, सत्र २०२२

विश्व कल्याण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अनुष्ठित संवत्सरव्यापी चातुर्वेद स्वाहाकार यज्ञानुष्ठान दि.१२.०३.२०२४ से निरन्तर गतिमान

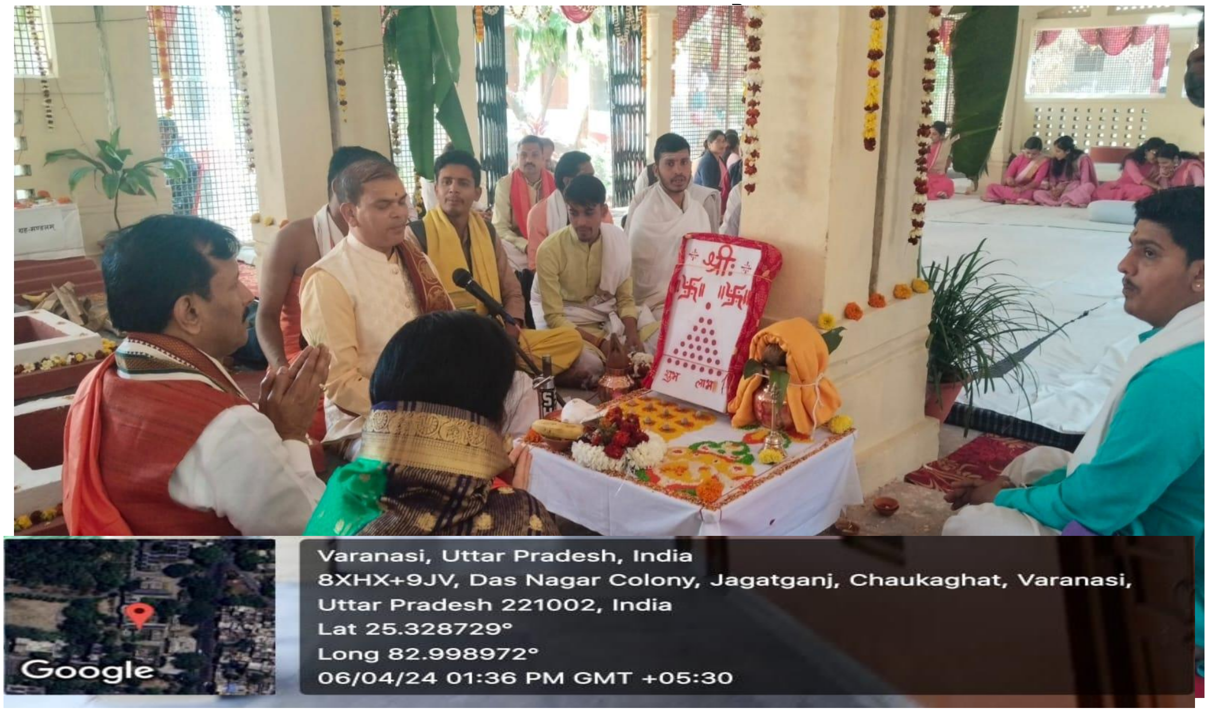

कलश परिक्रमा यात्रा में सम्मिलित विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति,आचार्य,छात्र एवं कर्मचारीगण दि.१२.०३.२०२४

विश्व कल्याण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अनुष्ठित संवत्सरव्यापी चातुर्वेद स्वाहाकार यज्ञानुष्ठान दि.१२.०३.२०२४ में पूजन कराते विश्वविद्यालय के छात्र एवं आचार्य

विश्व कल्याण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अनुष्ठित संवत्सरव्यापी चातुर्वेद स्वाहाकार यज्ञानुष्ठान में अनुष्ठान करते विश्वविद्यालय के छात्र एवं आचार्य दि.२२.०३.२०२४